Communal Harmony

Department of Posts has been conducting stamp design competitions/ photography competitions on various themes since 2015 on the occasion of Independence Day, Children's Day and Republic Day at national level. Based on the entries received from participants, stamps are designed and released. Selected participants are given cash awards. This time, a nationwide stamp design competition on the theme "Communal Harmony" was conducted on the occasion of Children's Day, 2018. The theme was chosen to mark the 150th Birth Anniversary celebrations of the Father of our Nation, Mahatma Gandhi, for whom Communal Harmony was a matter very close to his heart. The competition elicited tremendous response and the Department is thankful to those parents and school authorities who encouraged their children to participate in this competition. Based on the selected entries, Stamps, Miniature Sheet, First Day Cover and Brochure have been designed.

India is a land of diverse cultures and religions; it is a heterogeneous space where we see a variety of traditions prevailing together. Each religious group/sect has its own set of beliefs alongwith individual festivals, yet we flourish as a democratic nation and celebrate the idea of 'Communal Harmony'. The word 'Communal' derives its identity from 'Community', therefore to understand the term 'Communal Harmony' we need to relate it to a sense of mutual respect existing amongst communities or religious sects. In other words, despite diversity of beliefs and customs, religious communities must not undermine each other's traditions.

Each community thrives upon its vast network of folk songs, customary beliefs and a rich variety of traditions, which are specific to that particular community. Each community may differ in its culture, customs, traditions, food, everyday practices and sometimes language, yet our identity as a nation comes into being as all communities collectively embrace brotherhood. Even though each citizen carries a different identity given by its community, all individuals are tied together through one common thread of patriotism; which is to say that their national identity has a wider impact than identity derived by them from their community. The essence of 'Communal Harmony' lies in the idea that all communities despite socio-cultural differences maintain unity in diversity. The Constitution gives equal respect to all communities/ religious groups. All citizens enjoy the same Fundamental Rights regardless of their community/ individual identities.

The cultural heritage of India is widely known for its dynamic versatility of communities and religious beliefs but at the same time, it is since time immemorial that we all believe in the idea of 'united we stand and divided we fall.' It is a noteworthy fact that in order to take this tradition forward it is our moral responsibility to inculcate these values into our youth and reiterate the notion of brotherhood. The idea of 'Communal Harmony' is also upheld in school textbooks to sensitize the children and to ensure that they understand its essence in their tender age.

Mahatma Gandhi, father of the nation was a part of numerous freedom struggles throughout his life. He was an epitome of honesty and non-violence and a staunch believer of harmony amongst all communities. His vision was one of a nation where there is no space for malice, hatred or violence of any kind; in fact, he truly believed that any nation can prosper only when its citizens join hands together and become strong supporters of one another.

According to Gandhian philosophy Communal Harmony means "an unbreakable heart unity, the first thing essential for achieving such unity is for every Indian whatever his religion may be to feel his identity with everyone of the millions of the inhabitants of Hindustan". Gandhiji's vision on Communal Harmony is alive even today and his thoughts take our nation towards path-breaking success. Our Nation is built on the very fulcrum of communal harmony that tends to bind different identities together despite absolute disparities.

Keeping this into consideration, Philately Division, Department of Posts organised a Painting Competition. Entries from participants were invited in categories according to their classes and the winners will be awarded exciting cash prizes. Based on the selected entries, philatelic items viz. Miniature Sheet, Stamps, First Day Cover, Brochure are designed and are being released on the occasion of Children's Day 2018. The first three winners in the category of students studying upto class VI are Biprajit Malik, Agartala, Soumabha Barik, 24 Parganas, West Bengal, Viha Amit Shah, Mumbai. Five consolation winners are Shivani V. S., Kerala, Aritra Karar, Howrah, West Bengal, Kunwar Kshatrashal, Allahabad, UP, Bhumika Mishra, Kolkata, West Bengal and Debarati Das, Tripura. The first three winners in category of students studying in classes VII to XII are Fidal T, Kannur, Kerala, Sudhir Kumar, Kapurthala, Punjab, Mannat Anand, Noida, Uttar Pradesh. Five consolation prize winners are Sourojit Panja, Howrah, West Bengal, Tuhir Sri A.R., Chennai, Tamil Nadu, Masirah Reyaz Alam, Gorakhpur, Uttar Pradesh, Samiksha, Durg, Chhattisgarh and Arpita Das, Goa.

Department of Posts is pleased to issue a set of two Commemorative Postage Stamps on Communal Harmony.

Credits:

Text : Ms. Anika Singh

Stamps/Miniature Sheet/ FDC/ Brochure/ Cancellation Cachet : Smt. Alka Sharma, based on selected entries received from participants

भारतीय डाक विभाग

Department of Posts India
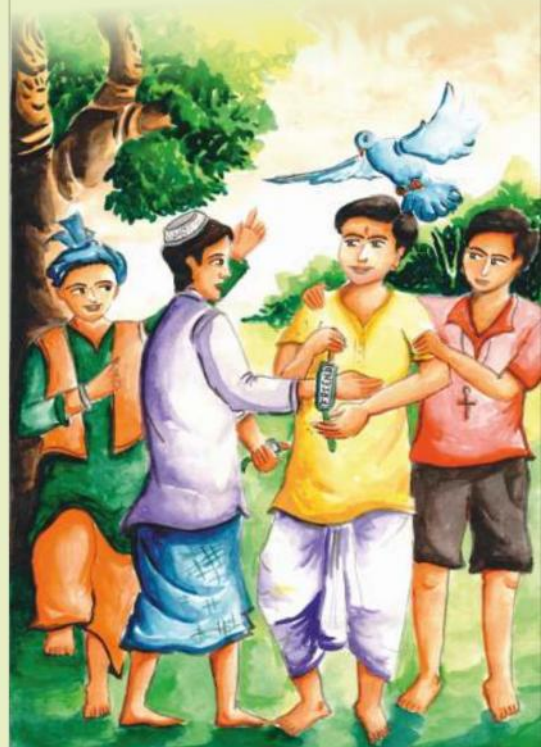
बाल दिवस CHILDREN'S DAY

सांप्रदायिक सद्भावना COMMUNAL HARMONY

विवरणिका BROCHURE

सांप्रदायिक सद्‌भावना

डाक विभाग, स्वतंत्रता दिवस, बाल दिवस और गणतंत्र दिवस के अवसर पर वर्ष 2015 से विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय स्तर की अखिल भारतीय डाक–टिकट डिजाइन प्रतियोगिता अथवा फोटोग्राफी प्रतियोगिता का आयोजन करता रहा है। इन प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों से प्राप्त प्रविष्टियों के आधार पर डाक–टिकट डिजाइन किए जाते हैं और इन्हें जारी किया जाता है। चयनित प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। बाल दिवस, 2018 के उपलक्ष्य में इस बार "सांप्रदायिक सद्‌भावना" विषय पर राष्ट्रव्यापी डाक–टिकट डिजाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। राष्ट्रपिता, महात्मा गांधी के मन में सांप्रदायिक सद्‌भावना का महत्व सबसे अधिक था। अतः, उनकी 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में इस विषय–वस्तु का चयन किया गया। इस प्रतियोगिता के लिए बड़ी संख्या में प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। डाक विभाग, उन अभिभावकों एवं स्कूलों का आभारी है, जिन्होंने बच्चों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रतियोगिता की चयनित प्रविष्टियों के आधार पर डाक–टिकटों के साथ–साथ मिनियेचर शीट, प्रथम दिवस आवरण और सूचना विवरणिका का डिजाइन तैयार किया गया है।

भारत विविध संस्कृतियों और धर्मों का देश है। यह ऐसी बहुलतावादी भूमि है, जहां विविध परंपराएं रची–बसी हैं। प्रत्येक धार्मिक समूह/पंथ की अपनी–अपनी मान्यताएं और त्योहार हैं। इसके बावजूद लोकतांत्रिक राष्ट्र होने के नाते हम "सांप्रदायिक सद्‌भावना" की मूल भावना को सर्वोपरि मानते हैं। "सांप्रदायिक" शब्द "संप्रदाय/समुदाय" से उद्धृत है। इसलिए, "सांप्रदायिक सद्‌भावना" के मूल भाव को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम इसे, विभिन्न समुदायों और धार्मिक पंथों के बीच मौजूद परस्पर सम्मान की भावना से जोड़कर देखें। अन्य शब्दों में, विभिन्न मतों और रीति–रिवाजों के वैविध्य के बावजूद धार्मिक संप्रदायों को एक–दूसरे की परंपराओं के विरूद्ध काम नहीं करना चाहिए।

प्रत्येक संप्रदाय, अपने विशिष्ट लोक गीतों, रीति–रिवाजों, विविध प्रकार की समृद्ध परम्पराओं के विशाल नेटवर्क के सहारे विकसित होता है। प्रत्येक संप्रदाय की संस्कृति, रीति–रिवाज, खान–पान, दैनिक कार्यप्रणाली और कभी–कभी भाषा भी भिन्न होती है। फिर भी, राष्ट्र के रूप में हमारी पहचान तभी होती है, जब सभी संप्रदाय सामूहिक रूप से भाईचारे के बंधन में बंधे हों। यद्यपि प्रत्येक नागरिक की एक अलग पहचान होती है, जोकि उसके संप्रदाय द्वारा उसे दी जाती है, फिर भी सभी व्यक्ति देशभक्ति के एक सूत्र से आपस में जुड़े रहते हैं। अतः ऐसा कहा जा सकता है कि संप्रदाय से मिली पहचान की तुलना में राष्ट्रीय पहचान का प्रभाव अधिक व्यापक होता है। प्रत्येक संप्रदाय की एक विशिष्ट क्रियाविधि है। "सांप्रदायिक सद्‌भावना" का मूलभूत सार यह है कि सामाजिक–सांस्कृतिक विभेदों के बावजूद, सभी समुदाय विविधता में एकता बनाए रखें। हमारा संविधान, सभी संप्रदायों/धार्मिक समूहों को समान मान्यता देता है। सभी नागरिकों को समान मौलिक अधिकार प्राप्त हैं, चाहे उसकी समुदाय/व्यक्तिगत पहचान कुछ भी हो।

भारत की सांस्कृतिक विरासत अपने समुदायों की गतिशील बहुविज्ञता और धार्मिक विश्वासों के लिए सुप्रसिद्ध है, किन्तु साथ ही अनादि काल से हम सभी 'एकता में बल है' में विश्वास करते हैं।

यह विचारणीय तथ्य है कि इस परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि हम इन मूल्यों को हमारी युवा पीढ़ी के मन में विकसित करें और उनमें भाईचारे की भावना पैदा करें। स्कूल की पाठ्य–पुस्तकों में भी 'सांप्रदायिक सद्‌भावना' के विचार को प्रोत्साहित किया जाता है ताकि वे कम उम्र में इसके सार को समझ कर इसे ग्रहण कर सकें।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जीवन–पर्यन्त स्वतंत्रता संग्राम का एक अटूट अंग रहे। वे ईमानदारी एवं अहिंसा के पुंज थे और सभी संप्रदायों में सौहार्द के पक्के विश्वासी थे। उन्होंने एक ऐसे राष्ट्र का सपना देखा था, जहां विद्वेष, घृणा और किसी भी प्रकार की हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। वस्तुतः उनका विश्वास था कि कोई भी राष्ट्र तभी खुशहाल हो सकता है जब इसके नागरिक मिलजुल कर रहें और एक–दूसरे का सहारा बनें।

गांधी दर्शन के अनुसार, सांप्रदायिक सद्‌भावना का अर्थ है "दिलों की एकता। ऐसी एकता हासिल करने के लिए अनिवार्य है कि प्रत्येक भारतीय, चाहे उसका धर्म कोई भी क्यों न हो, हिन्दुस्तान के लाखों लोगों में अपनी छवि देखें।" सांप्रदायिक सद्‌भावना पर गांधीजी की विचारधारा आज भी प्रासंगिक है और हमारे राष्ट्र को अभूतपूर्व उन्नति के पथ पर अग्रसर करने में सहायक है। हमारे राष्ट्र का निर्माण सांप्रदायिक सद्‌भावना की नींव पर हुआ है, जो पूर्णतः असमान होने के बावजूद विभिन्न पहचानों को एक साथ संजोए हुए है।

इसको ध्यान में रखते हुए फिलैटली डिवीजन, डाक विभाग ने एक चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की। प्रतिभागियों से प्रविष्टियां उनकी कक्षाओं के अनुसार, विभिन्न श्रेणियों में आमंत्रित की गईं और उनके विजेताओं को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। चयनित प्रविष्टियों पर मिनियेचर शीट, डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण, सूचना विवरणिकाओं के डिजाइन तैयार किए गए तथा इन्हें बाल दिवस–2018 के अवसर पर जारी किया जा रहा है। प्रतियोगिता की प्रथम श्रेणी अर्थात् कक्षा VI तक में प्रथम तीन विजेता हैं:– बिप्रजीत मलिक, अगरतला, सौम्भा बारिक, 24 परगना, पश्चिम बंगाल, विहा अमित शाह, मुम्बई। इसी श्रेणी में पांच सांत्वना पुरस्कार विजेता हैं– शिवानी वी. एस, केरल, अरित्रा करार, हावड़ा, पश्चिम बंगाल, कुंवर क्षत्रशाल, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भूमिका मिश्रा, कोलकाता, पश्चिम बंगाल तथा देबारती दास, त्रिपुरा। प्रतियोगिता की द्वितीय श्रेणी अर्थात् कक्षा VII से XII तक में प्रथम तीन विजेता हैं– फिडल टी, कन्नूर, केरल, सुधीर कुमार, कपूरथला, पंजाब, मन्नत आनंद, नोएडा, उत्तर प्रदेश। इसी श्रेणी में पांच सांत्वना पुरस्कार विजेता हैं– सौरोजीत पांजा, हावड़ा, पश्चिम बंगाल, तुहीर श्री ए. आर, चेन्नई, तमिलनाडु, मसीराह रेयाज आलम, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, समीक्षा, दुर्ग, छत्तीसगढ़ तथा अर्पिता दास, गोवा।

डाक विभाग, सांप्रदायिक सद्‌भावना पर दो स्मारक डाक–टिकटों का एक सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः

पाठ	:	सुश्री अनिका सिंह
डाक–टिकट/मिनियेचर शीट/ प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/ विरुपण मोहर	:	श्रीमती अलका शर्मा, प्रतिभागियों से प्राप्त चयनित विष्टियों पर आधारित।

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	1500 पैसा(2)
Denomination	:	1500 p (2)
मुद्रित डाक–टिकटें	:	5.0 लाख प्रत्येक
Stamps Printed	:	5.0 Lakh each
मुद्रित मिनियेचर शीट	:	1.10 लाख
Miniature Sheet Printed	:	1.10 Lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्यः ₹ 5.00